राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,अम्बिकापुर

जिला-सरगुजा,अम्बिकापुर

जिला-समन्वयक केंद्र

पीएम उषा

कम्पोनेंट-5

जेंडर इन्क्लूशन एंड इक्वलिटी इनीशिएटिव्स योजनान्तर्गत प्रायोजित

लैंगिक समानता में नारीवाद की भूमिका: मुद्दे और चुनौतियाँ विषयक राष्ट्रीय सेमिनार की रिपोर्ट

केंद्र सरकार की पीएम उषा योजना के कंपोनेंट-5 (जेंडर इन्क्लूशन एंड इक्वलिटी इनीशिएटिव) के तहत 6 और 7 दिसम्बर 2024 को राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बिकापुर में *"लैंगिक समानता में नारीवाद की भूमिका: मुद्दे और चुनौतियाँ"* विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया । इस सेमिनार में देशभर से आए विशेषज्ञों, विद्वानों, शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं ने लैंगिक समानता और नारीवाद से जुड़े समकालीन मुद्दों पर गहन चर्चा की। सेमिनार का उद्देश्य लैंगिक समानता को समाज में बढ़ावा देना और नारीवाद के प्रभावी पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना था।

उद्घाटन सत्र:
सेमिनार का उद्घाटन *प्रो. प्रेम प्रकाश सिंह*, माननीय कुलपति, संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय, सरगुजा, अम्बिकापुर द्वारा किया गया। उन्होंने नारीवाद के महत्व पर चर्चा करते हुए कहा कि लैंगिक समानता को समाज में स्थापित करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित *प्रो. आशुतोष कुमार*, संपादक, आलोचना त्रैमासिक और दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ने नारीवाद के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर अपने विचार साझा किए । बीज-वक्ता के रूप में *डॉ. शुभ्रा नगालिया*, एसोसिएट प्रोफेसर, लैंगिक अध्ययन केंद्र, डॉ.बी.आर.अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली ने नारीवाद की ऐतिहासिक यात्रा से अपनी बात शुरू करते हुए इस तथ्य की ओर ध्यान आकृष्ट किया कि लैंगिक समानता की कोई एक निश्चित और स्पष्ट रूपरेखा नहीं है | नारीवाद को अपने स्वरूप को व्यापक और वैविध्यपरक रखना होगा तभी लैंगिक समानता के लक्ष्य को हासिल करना संभव होगा | उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो.*रिजवान उल्ला* ने की।उन्होंने सेमिनार के साथ-साथ पीएम उषा योजना के उद्देश्य और उसके अंतर्गत आयोजित होने वाले विविध कार्यक्रमों पर विस्तार से प्रकाश डाला |

सम्मेलन का संचालन *श्री विनीत गुप्त* ने किया। स्वागत उद्बोधन *डॉ. दीपक सिंह*, विषय-प्रवेश डॉ. कामिनी और धन्यवाद ज्ञापन *ब्रजेश कुमार* ने किया |

Scanned with OKEN Scanner

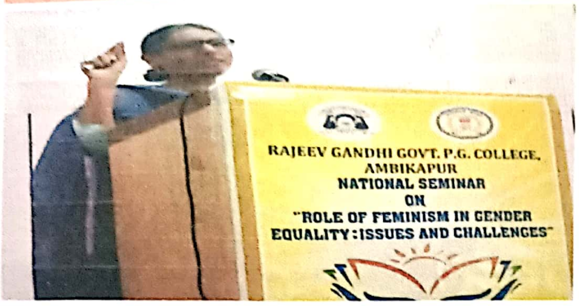

प्रथम तकनीकी सत्र: "जाग तुझको दूर जाना"

प्रथम तकनीकी सत्र कविता के माध्यम से लैंगिक समानता पर विस्तृत परिचर्चा का था | यह सत्र आडिटोरियम में उपस्थित सभी श्रोताओं के साथ खुली परिचर्चा का था | सत्र में *पूनम वासम* (बीजापुर, छत्तीसगढ़) और *पार्वती तिर्की* (रांची, झारखंड) ने अपनी कविताओं के माध्यम से नारीवाद और लैंगिक समानता के मुद्दों पर प्रकाश डाला। पूनम ने अपनी कविताओं के माध्यम से विकास के आधुनिक माडल के आदिवासी जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव के सन्दर्भ में लैंगिक समानता के मुद्दों को रेखांकित किया | पार्वती तिर्की ने आदिवासी जीवन पद्धति में शामिल लैंगिक समानता को कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया | सत्र की अध्यक्षता *प्रो. आशुतोष कुमार* ने की । इस सत्र में एक खुली चर्चा का आयोजन किया गया, जिसमें उपस्थित सभी श्रोताओं ने गंभीरता पूर्वक विचार-विमर्श किया |

Scanned with OKEN Scanner

दूसरे दिन की गतिविधियाँ:

1. **तकनीकी सत्र 2 – "एक दुनिया समानांतर":**
   दूसरे दिन की शुरुआत में फिल्म शो और परिचर्चा का आयोजन किया गया। फिल्म *"जया जया जया हो"*की स्क्रीनिंग के बाद, *निरंजन कुजूर*, फिल्मकार और शोधकर्ता ने फिल्म के सामाजिक सन्देश और लैंगिक समानता पर इसके प्रभाव की विस्तार से चर्चा की। सत्र की अध्यक्षता *प्रो. प्रणय कृष्ण*, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने की । इस सत्र में भी खुली चर्चा का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं ने फिल्म के सन्देश पर सवाल-जवाब किए ।

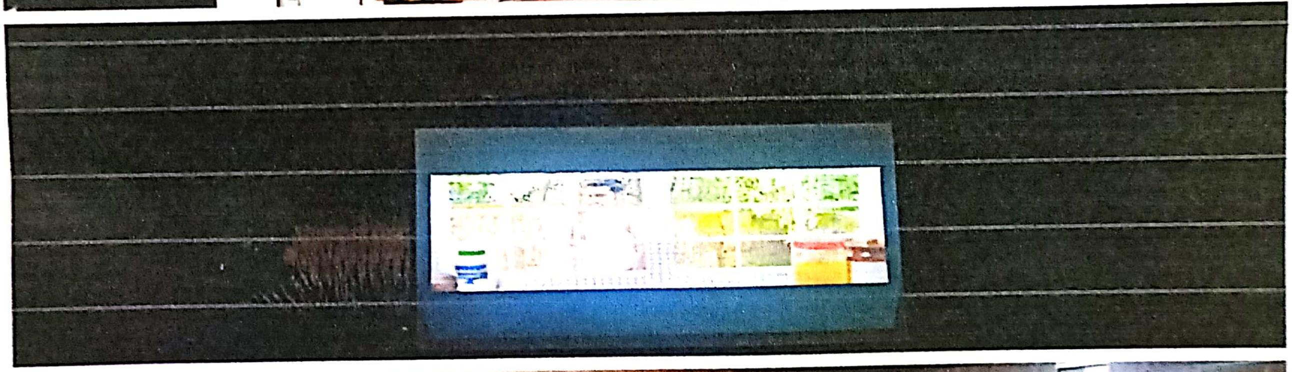

Scanned with OKEN Scanner

2. **तकनीकी सत्र 3 – शोध पत्र प्रस्तुतिकरण:**
इस सत्र में विभिन्न शोधकर्ताओं ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। इस सत्र में रिसोर्स पर्सन के रूप में *डॉ. रजनीश कुमार सिंह*, विभागाध्यक्ष, शिक्षा शास्त्र और *डॉ. आर. पी. सिंह*, सहायक प्राध्यापक, अंग्रेजी ने शोध पर महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता *डॉ. अनिल कुमार सिन्हा*, विभागाध्यक्ष भूगोल और कोऑर्डिनेटर IQAC ने की। सत्र का संचालन *डॉ. तृप्ति विश्वास* ने किया और धन्यवाद ज्ञापन *डॉ. पियूष पाण्डेय* ने दिया। इस सत्र में कुल 16 छात्राओं ने अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किये | यह सत्र गंभीर विचार-विमर्श का था,जिसमें लैंगिक समानता में नारीवाद की भूमिका विषय पर विभिन्न शोधपरक दृष्टिकोण सामने आये |

3. **नाट्य मंचन – "चलीं हैं कलेक्टर बनाने":**
सम्मेलन के अंतिम सत्र में *कोरस इलाहाबाद* द्वारा नाट्य मंचन *"चलीं हैं कलेक्टर बनाने"* की प्रस्तुति की गई, जिसका निर्देशन *समता राय* ने किया। नाटक ने नारीवाद और लैंगिक समानता के मुद्दों को प्रभावी तरीके से प्रस्तुत किया। धन्यवाद ज्ञापन *श्रीमती दीपिका स्वर्णकार* ने दिया।

Scanned with OKEN Scanner

समापन सत्र:

सम्मेलन का समापन सत्र विचारशील और प्रेरणादायक रहा। मुख्य अतिथि *डॉ. एस. के. त्रिपाठी*, पूर्व अपर संचालक, सरगुजा संभाग और पूर्व प्राचार्य, राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बिकापुर ने लैंगिक समानता के मुद्दे पर जोर दिया और इसके लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता को बताया। *प्रो. जी. ए. घनश्याम*, संयुक्त संचालक उच्च शिक्षा, *प्रो. एस. के. श्रीवास्तव*, *डॉ. अनिल सिन्हा* और *डॉ. राजकमल मिश्र* ने भी सम्मेलन की महत्ता पर अपने विचार साझा किए। समापन सत्र का संचालन *सुसंना लकड़ा* ने किया और धन्यवाद ज्ञापन *डॉ. दीपक सिंह* ने दिया।

Scanned with OKEN Scanner

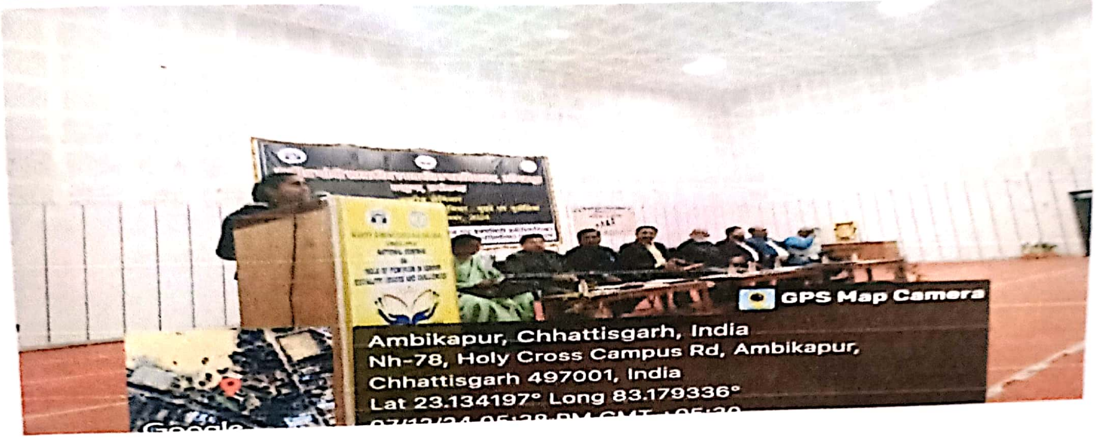

उपलब्धियाँ और परिणाम:

यह सम्मेलन लैंगिक समानता और नारीवाद के महत्वपूर्ण मुद्दों पर जागरूकता फैलाने में सफल रहा। सम्मेलन के दौरान आयोजित विभिन्न सत्रों, फिल्मों, कविताओं और नाटकों ने नारीवाद और लैंगिक समानता की आवश्यकता पर प्रकाश डाला और समाज में इसके लिए सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित किया। इस आयोजन ने यह साबित किया कि लैंगिक समानता के लिए सामूहिक प्रयासों और सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता है। प्रतिभागियों और वक्ताओं ने समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए अपने विचारों और अनुभवों को साझा किया, जो भविष्य में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकते हैं। सेमिनार में सरगुजा जिले के कुल 7 महाविद्यालय की 300 छात्राओं का नि:शुल्क पंजीकरण किया गया था, जो सेमिनार के सभी सत्रों में सक्रिय रूप से उपस्थित रहीं।

संयोजक   प्राचार्य

Scanned with OKEN Scanner